

भगत नामदेव - सबद २७
हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥
रागु गोंड, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७४

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥
हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥
सो हरि अंधुले की लाकरी ॥ १ ॥
हरए नमसते हरए नमह ॥
हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हरि हरनाकस हरे परान ॥
अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥
सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥
सो हरि नैनहु की पूतरी ॥ २ ॥
हरि हरि करत पूतना तरी ॥
बाल घातनी कपटहि भरी ॥
सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥
गऊतम सती सिला निसतरी ॥ ३ ॥
केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥
जीअ दानु काली कउ दीआ ॥
प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥
जासु जपत भै अपदा टरी ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

सार: धर्म कोई धार्मिक या सामाजिक नियम नहीं है जिसका पालन किया जाए, यह उन कार्यों के बारे में है जो सृष्टि की एकता को बढ़ावा देते हैं। नेकी की यह अवस्था केवल यह बौद्धिक एहसास नहीं है कि समस्त अस्तित्व एक ही पारिस्थितिकी तंत्र है बल्कि यह उस सत्य की दैनिक जीवन में जीवंत

अभिव्यक्ति है। यह तब उत्पन्न होती है जब आंतरिक चेतना और बाहरी कार्य पूरी तरह से एक-दूसरे के अनुरूप होते हैं। एकता को भीतर से महसूस करने के लिए, उसका प्रवाह व्यक्ति के सोचने, बोलने और कार्य करने के तरीकों में भी दिखना चाहिए। जब काम इस चेतना को दर्शाते हैं तब वह स्वाभाविक रूप से अहंकार, विभाजन और संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठ जाते हैं। इस प्रकार, धर्म-सम्मत नेकी, एकता की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति के बीच एक अटूट निरंतरता है।

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥

सर्वव्यापी ऊर्जा के सार के साथ एकाकार होने पर, सारे संदेह-भ्रम मिट जाते हैं। इसका अर्थ है कि सृष्टि की एकता को स्मरण करने से मानसिक भटकाव दूर होता है और आंतरिक संतुलन पुनः स्थापित होता है।

हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥

सृष्टि की एकता पर चिंतन करना और उसे व्यक्त करना ही धर्म का सर्वोच्च रूप है। यह धर्म को उस नेकी के रूप में प्रस्तुत करता है जिसमें व्यक्ति भीतर से एकता को जानता है और बाहर से उसे व्यक्त करता है।

हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥

जैसे-जैसे हम उस सर्वव्यापी ऊर्जा के सार के साथ एकाकार होते जाते हैं, जाति और कुल मिट जाते हैं। यह पहचान के विलीन होने को दर्शाता है क्योंकि एकता की अनुभूति हो जाने पर सामाजिक ऊँच-नीच और कुल-गोत्र का अभिमान निरर्थक हो जाता है।

सो हरि अंधुले की लाकरी ॥ १॥

वह सर्वव्यापी चेतना, दृष्टिहीनों के लिए लाठी के समान मार्गदर्शक शक्ति है। यह आत्म-चिंतन को उस मन के लिए एकमाल और सबसे भरोसेमंद मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत करता है जो अज्ञानता से अंधा हो चुका है। (१)

हरए नमसते हरए नमह ॥

मैं उस सर्वव्यापी चेतना के सम्मान को नमन करता हूँ और अपने अहंकार को उस सर्वत्र विद्यमान स्रोत के चरणों में समर्पित करता हूँ। संस्कृत शब्द 'नम', दो शब्दों से बना है, 'मह' जो अहंकार का प्रतिनिधित्व करता है और 'न', जो उसका खंडन करता है, अर्थात्, मैं अपने घमंड को समर्पित करता हूँ। जब इसे 'ते' के साथ जोड़ते हैं, अर्थात् 'आपको', यह 'नमस्ते' बन जाता है, जिसका भाव है, हे सर्वव्यापी चेतना, 'मैं' अपने अहंकार को आपके चरणों में झुकाता हूँ। यह अभिव्यक्तियाँ सभी प्राणियों में विद्यमान दिव्यता के प्रति श्रद्धा को दर्शाती हैं।

हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥ १॥ रहाउ ॥

उस सर्वव्यापी एकता के सार के साथ एकाकार होने पर, वह आध्यात्मिक मृत्यु उत्पन्न नहीं होती जो दुखों का मूल कारण है। यह उस मनःस्थिति को दर्शाता है जो एकत्व में स्थिर है, द्वैत, नश्वरता या अनित्यता के प्रभाव से पूर्णतः अछूता। (१)(विराम)

हरि हरनाकस हरे परान ॥

अहंकारी राजा हिरण्यकशिपु जैसे नकारात्मक गुणों का विनाश करने से, वह सर्वव्यापी चेतना जागृत होती है जो जीवन में सकारात्मक विकास का संचार करती है। यह अहंकार के विनाश का प्रतीक है क्योंकि प्रकृति के नियम अनिवार्य रूप से उस बेलगाम और अहंकारी अहं को ध्वस्त कर देते हैं।

अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥

अजामल, जो सदाचार के मार्ग से भटक गया था, उसने भी बैकुंठ अर्थात् स्वर्ग में अपना स्थान प्राप्त किया, जो कि परम शांति का लोक है। यह दर्शाता है कि जिन लोगों ने अपना जीवन अव्यवस्था या कुमार्ग में बिताया हो, वह भी ज्ञान की खोज के माध्यम से अपना कायाकल्प कर सकते हैं और आंतरिक स्पष्टता को प्राप्त कर सकते हैं।

सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥

तोते को एकत्व का नाम जपना सिखाते हुए, गणिका नामक एक वैश्या ने भी नकारात्मकता के सागर को पार कर लिया। यह सिद्ध करता है कि सकारात्मकता के साथ किया गया कोई भी कार्य, भले ही वह केवल यांत्रिक अर्थात् बिना गहरे भाव के ही क्यों न हो, हमारे अवचेतन मन में गहन परिवर्तन और विकास ला सकता है।

सो हरि नैनहु की पूतरी ॥२॥

इस प्रकार, वह सर्वव्यापी एकत्व हमारी आँख की पुतली के समान हो जाता है। केंद्रीय दृष्टि यानी आँखों की पुतली का यह संदर्भ, जोर देता है कि यह चेतना ही वह मूल केंद्र है जिसके माध्यम से हम इस यथार्थ सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव कर पाते हैं। (२)

हरि हरि करत पूतना तरी ॥

सर्वव्यापी एकता के साथ सामंजस्य बैठा कर पूतना, जो एक द्वेषपूर्ण मानसिकता का प्रतीक थी, अपनी नकारात्मकता से पार हो गई। इससे पता चलता है कि जब हम जागरूकता और समझ विकसित करते हैं तब हम गहरी जड़ें जमाए हुए, हानिकारक और भ्रामक विचारों को भी बदल सकते हैं।

बाल घातनी कपटहि भरी ॥

निर्दोषों का संहार करने वाली वह राक्षसी कपट से भरी हुई थी। यह उन प्रवृत्तियों को दर्शाता है जो दुर्भावनापूर्ण इरादों और धूर्ततापूर्ण चालों से भरे होते हैं।

सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥

चिंतन और स्मरण के माध्यम से, राजा द्रुपद के पुत्र ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पौराणिक पात्र धृष्टद्युम्न की यह कथा, जिसने प्रतिशोध की विनाशकारी भावना पर विजय प्राप्त की, यह आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने में आत्म-चिंतन की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाती है।

गऊतम सती सिला निसतरी ॥३॥

ऋषि गौतम की पतिव्रता पत्नी जो पत्थर में बदल गई थी, उसे मुक्ति प्राप्त हुई। यह रूपक उदासीनता से करुणा की ओर होने वाले बदलाव को दर्शाता है, यहाँ पत्थर आध्यात्मिक अज्ञान का प्रतीक है और मुक्ति आध्यात्मिक जागरण का प्रतिनिधित्व करती है। (३)

केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥

वह सर्वव्यापी शक्ति जिसने केशी और कंस का अंत किया। यह नकारात्मक पाल विनाशकारी गुण, जैसे कि आक्रामकता, अहंकार और अत्याचार के आंतरिक तानाशाहों का प्रतीक हैं।

जीअ दानु काली कउ दीआ ॥

उस सर्वव्यापी शक्ति ने काली नामक सर्प के प्राण बख्शने का वरदान दिया। यह कृत्य केवल करुणा नहीं बल्कि रूपांतरण की ओर संकेत करता है, सर्प का यह रूपक यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की विषैली वृत्तियों को भी आध्यात्मिक निपुणता के माध्यम से सार्थक कार्यों में बदला जा सकता है।

प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥

नामदेव कहते हैं कि वह ऐसी ही सर्वव्यापी चेतना के समक्ष नतमस्तक होते हैं। यह समस्त जगत के कल्याण हेतु एकत्व की खोज करने और उसका सम्मान करने के महत्व को उजागर करता है।

जासु जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥५॥

उस सर्वत्र विद्यमान शक्ति का चिंतन करने से विपत्तियों का भय समाप्त हो जाता है। यह दर्शाता है कि एकता की तरंगों, जीवन की उथल-पुथल और अराजकता के विरुद्ध स्पष्टता का एक सुरक्षा-कवच निर्मित करती हैं। (४)(१)(५)

तत्त्व: भगत नामदेव पौराणिक पालों के उदाहरणों से यह समझाते हैं कि हम बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया करने के बजाय, अपनी जागरूकता के माध्यम से अपनी नकारात्मक भावनाओं को बदल सकते हैं। पूतना की कहानी यह दर्शाती है कि हम सत्य से जुड़कर अपने बुरे इरादों पर नियंत्रण कर

सकते हैं। गणिका हमें सिखाती है कि गलतियाँ भी आत्म-जागृति का माध्यम बन सकती हैं जबकि कंस यह दर्शाता है कि विनाशकारी शक्तियों का अंततः विनाश ही होता है। यह कथाएँ हमारी आंतरिक यात्रा पर प्रकाश डालती हैं और हमें याद दिलाती हैं कि हमारे भीतर जो कुछ भी है, वह स्थिर या अपरिवर्तनीय नहीं है, उसे समझा जा सकता है और नया रूप दिया जा सकता है। सच्चा विकास तभी होता है जब हम अंधकार को जागरूकता में बदलते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com